RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-01
January -2019

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com [UGC Listed Journal]

मिथिला में लोकगाथा

डॉ० गुड़िया कुमारी

विश्वविद्यालय प्राचीन भारतीय इतिहास पुरातत्त्व एवं संस्कृति विभाग ल० ना० मिथिला विश्वविद्यालय, कामेश्वरनगर, दरभंगा–846008

लोकगाथा मिथिला के मौखिक इतिहास का महत्त्वपूर्ण स्त्रोत और अनमोल धरोहर है, जिसमें समाज की आस्था, विश्वास, राग–भास, जीवन–संघर्ष और उक्ष्वास प्रतिबिम्बित है। किसी भाषा की लोकगाथा साहित्य के विविध रूप को अपने कलेवर में अक्षय भंडार की तरह समेटे रहती है।

लोकगाथा लोक साहित्य का महत्वपूर्ण अंग है। हमारे विचार से शिष्ट साहित्य में जो स्थान महाकाव्य का है, वही स्थान लोक साहित्य में लोकगाथा का है। सही अर्थ में लोकगाथा लोक साहित्य का महाकाव्य है। महाकाव्य के जो नायक होते हैं, वे इतिहास प्रसिद्ध होते हैं और लोकगाथा के नायक लोक प्रसिद्ध। महाकाव्य के नायक उच्चकुलमूल के होते हैं तो लोकगाथा के नायक सामान्य जन से उदित होते हैं। मिथिला में जितनी भी जातियाँ हैं सबों में एकाध नायक की गाथा प्रचलित है, जो श्रुति परम्परा से पुस्त–दर–पुस्त चली आई है।

मिथिला का लोक साहित्य लोकगाथा और लोकमंत्र का विपुल भंडार है। मिथिला में लोकगाथा का विवेचन करने से अनेक अविस्मरणीय चरित्र का यहाँ अवतरण हुआ है। मिथिला का विस्तृत भू–भाग लोरिक की वीर–गाथा भूमि है, तो सल्हेस, कुसमा, दोना और कजरी, मांजरि, रंगलोक, नैकाबनिजारा सब का उद्दाम प्रेम और चूहड़मल की कार्यस्थली रही हे। मिथिला की लोकगाथा में मुख्यतः वीर–रस के साथ श्रृंगार रस का अद्भूत सम्मिश्रण हम देखते हैं। इस सभी लोक गाथाओं में मिथिला संस्कृति का ऐतिहासिक सामग्रियाँ भी उपलब्ध है। जो मिथिला के इतिहास को नई दिशा देती है। लवहरि कुशहरि लोकगाथा में रामकाव्य परम्परा का विकास देखने को मिलता है, तो धनपाल, रणपाल, विजयमल सलहेस आदि लोकगाथाओं में मध्यकालीन शौर्य और वराक्रम का उल्लेख मिलता है। अनंग–कुसमा, रोमियो–जुलियट के रोमांस का प्रत्यक्ष उदाहरण है।

दूलरा दयाल मिथिला के भगीरथ है तो दीना–भद्री शोषण और उत्पीड़न के विरूद्ध संघर्ष का प्रतीक है। नैकाबनिजारा मिथिला के वाणिज्य–व्यवसाय का द्योतक है तो मोहली–सुल्तान और सती मांजरि में मुसलमानों के सामाजिक जीवन का यथार्थ विवरण मिलता है। ये लोकगाथायें मिथिला के लोकगाथा का रत्न माना गया है।

इस तरह मिथिला में लोकगाथा, जो साहित्य का अभिन्न अंग है जो सम्पूर्ण समाज के इतिवृति एवं इतिहास को उजागर करता है। वस्तुतः मिथिला की लोकगाथा समाज की रचना है एवं इसमें द्विजेत्तर जाति का सामाजिक एवं सांस्कृतिक वस्तुस्थिति का यथार्थ परिचय मिलता है। यह वंचित वर्ग का ऐतिहासिक दस्तावेज है।

लोकगाथा लोकप्रिय संस्कृति में उत्पन्न होनेवाली अपने आप में सम्पूर्ण इतिहास है, जो जन्म से लेकर मृत्यु तक की गाथा गाता है।

मिथिला की लोक संस्कृति धर्म केन्द्रित है, जिसका प्रत्यक्षीकरण थान, गहबर, लोकदेवा, देवता, व्रत–अनुष्ठान, पर्व–त्योहार, भगैत, सुमरिन डाल–पूजन, प्रकृति–पूजन आदि से होता है। लोक जन्म से देवी कृपा, आपदा विपदा को देवी प्रकोप एवं उन्नत कृषि को देवी प्रसाद मानते हैं। धर्म के प्रति लोक आस्था की प्रांजल अभिव्यक्ति इस रूप में हुई है– धर्म अनुपालन में यदि हानि भी हो तो भी धर्म का मार्ग नहीं छोड़ना चाहिए।

वैसे मिथिला संस्कृति का इतिहास अति प्राचीन है। जितना ही स्मृद्धि है उतना ही रोचक है तथा उतना ही लोकरंजक है, इसका सम्यक परिचय तो हमें लोकगाथा के अवगहन से ही करते हैं।

सांस्कृतिक तथा धर्म अध्येताओं का ध्यान भारतीय समाज में एक अपना विशिष्ट स्थान रखता है, जो गाथाओं के प्रति आकर्षित करता है। प्राचीन प्राथाओं के माध्यम से पौराणिक जनपदों के इतिहास और संस्कृति का पता चलता है। अनेक पौराणिक गाथाओं, रामायण तथा महाभारत के अनेक लोक संस्करण भी भारतीय समाज में प्रसिद्ध और प्रचलित है। छत्तीसगढ़ की पण्डवानी नामक लोकगाथा महाभारत का रूपान्तरण है तथा लक्ष्मण जटी की कथा रामायण के मूल कथानक पर आधिरत है। इन गाथाओं के सूक्ष्म विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकलता है कि भारतीय संस्कृति के उपर्युक्त सर्वमान्य और बहुप्रचलित आख्यानों को अनेक सुसंस्कृत रूप में ग्रहण न करके एक भिन्न दृष्टिकोण से स्वीकार करके ग्रामीण क्षेत्र के निवासियों ने उन्हें अपनी संस्कृति का अंग बना लिया। प्राथाओं को लोक तत्त्व में बदल कर उस गाथा का मूलरूप ही बदला गया। लोकमानसिकता और लोक हृदय इन पौराणिक घटनाओं को एक नवीन दृष्टिकोण से स्वीकार करता है।

RRIJM 2015, All Rights Reserved

मिथिला जनपद में लगभग तीस लोक गाथाएँ प्रचलित हैं। लोक गाथाओं की इन रचनाओं को अज्ञात जनकवियों द्वारा 17वीं शताब्दी के पश्चात् रची की गई। लोक साहित्य के अन्तर्गत लोकगाथाओं का हमेशा विकास होता रहा है। इन गाथाओं का पारम्परिक विषय प्रेम, विवाह, मान, युद्ध, शौर्य, संत आदि की चर्चा है, साथ ही ये ऐतिहासिक तथा देव–विषयक दोनों है।

ग्राम्य समाज में पूर्णतः समादृत पूजा–पाठ में लोकगाथाओं का गायन भगैत कहलाता है।

मिथिला में लोकगाथा के साथ–साथ लोकगीत का भी शुरू से ही चलन रहा है। लोककथा में उनके पात्र एवं घटनाओं को लोक गीत के माध्यम से प्रस्तुत करते हैं। गीत कथाओं और लोकगाथाओं में घटित घटनाओं, में उद्‌भूत वहुलता होती है, उसका महत्व संस्कृति की अपेक्षा साहित्यक अधिक होता है।

मिथिला में लोक गाथाओं का क्षेत्र इतना विस्तृत है कि सिर्फ मिथिला के प्राचीन या वर्तमान स्थिति, समाजिक संगठन सम्बन्धी निष्कर्ष आदि पर पहुँचना तर्क संगत प्रतित नहीं होगा, इसके विपरीत विभिन्न गाथाएँ और उत्पत्ति–कथाएँ जिनमें जनजातियों के मूलभूत लोक–विश्वास निहित होते हैं, जिसको समझे बिना जनजातियों के सांस्कृतिक अध्याय को पूरा नहीं किया जा सकता है।

प्रो0 ए0 बी0 गुमेर ने इसकी विस्तृत चर्चा की है। उनके अनुसार लोकगाथा गाने के लिए लिखी गई ऐसी कविता हैं जो सामुदायिक नृत्य से सम्बन्धित रहती है, पर इसमें मौखिक परम्परा ही प्रधानता है। कई विद्वान लोकगाथा को छोटे–छोटे पदों में रची कविता मानते हैं। जिसमें कोई लोकप्रिय कथा विस्तार से कही गई होती है।

तात्पर्य यह है कि लोकगाथाओं में गीतात्मकता अनिवार्य तत्त्व है। कथानक प्रभावशाली और विस्तृत होता है, पर वह व्यक्तित्वविहीन होती है, अर्थात उनके रचयिताओं का पता नहीं होता है। ये समाज के किसी वर्ग और व्यक्ति विशेष से संबद्ध नहीं है। अपितु सम्पूर्ण समाज की धरोहर है, इसका उद्‌गम जन–साधारण की मौखिक परपंरा से होता है। काव्यकला के सौंदर्य और गुणों का इसमें अभाव रहता है।

यद्यपि मिथिला में अनेक प्रकार की लोकगाथाओं का भंडार हैं। लेकिन उसमें कथा वर्गीकरण विषय के आकार–प्रकार की दृष्टि से तय किया गया है। अपने–अपने क्षेत्रों की लोकगाथा एवं गीतकथा अपने क्षेत्रों का विस्तृत सांस्कृतिक दस्तावेज है। जो अनेक सांस्कृतिक क्षेत्रों में एक ही गाथा को भिन्न–भिन्न परिवर्तनों के साथ गायी जाती है। अपने–अपने क्षेत्रों की संस्कृति अपनी–अपनी लोक गाथा में विद्यमान रहती है। इसी कारण गीतकथाओं एवं लोगाथाओं में प्राप्त शोभा और महत्ता के वर्णन सौंदर्य और श्रृंगार के चित्र, युद्ध के अनेक पक्षों के विवरण अधिक पूर्ण सशक्त एवं बलशाली होते हैं। निःसन्देह काव्य की दृष्टि से लोक साहित्य के इस अंग का स्थान अत्यन्त महत्त्वपूर्ण होते हैं।

सभी रसो का सुन्दर चित्रण गाथाओं एवं गीतों में थोड़े–बहुत मात्राओं में परिलक्षित होता है। सहज भाव से प्रेम, मान और विरह के विभिन्न आकर्षक उदाहरण देखने को मिलता है, छत्तीसगढ़ी लोकप्रिय प्रेमगाथा चन्दनी वीरता, शौर्य और प्रेम की गाथा है, रसालू कुँवर की गाथा, वीर और रौंद्र रस से सरावोर है, आल्हा–ऊदल की गाथा, महाराष्ट्र वीर पवाड़े, की गाथा, गोडो की बैरागढ़ के राजकुमार की गाथा भी इस दृष्टि से उल्लेखनीय हैं। कभी–कभी लोकगाथाओं का व्यंग्य सीधा, सरल तथा स्पष्ट न होकर अत्यन्त तीव्र भी हो जाती है। राजा भरथरी की लोकगाथा में शान्ति और वैराग्य के सुन्दर उपदेश भरे पड़े हैं।

लेकिन रंग–मंच पर इसका स्वरूप बदल जाता है। यह रंग–मंच कई सदियों से निम्न वर्गों के लोगों ने लोकनाट्य और लोगाथाओं को गाँवों एवं कसवे में प्रस्तुत करते हैं। विवाह, पर्व या अन्य विशिष्ट अवसरों पर इन लोकगाथाओं को प्रस्तुत किया जाता है। ठेढ ग्रामीण शब्दावली में इसका गायन होता है। लोक गाथाओं को गाने का भास अलग–अलग होता है। सब जगह सब लोकगाथाओं की अपनी–अपनी पहचान होती है। यानी जिस स्थान से लोकगाथा कही (बोली) जाती है, उस स्थान की भाषा को लोकगाथा के माध्यम से प्रस्तुत किया जाता है। इन लोकगाथाओं में खुलकर उन सब बातों का प्रयोग किया गया है, जो सामन्ती मनोवृत्ति के आभिजालु वर्ग को स्वीकार नहीं है। वस्तुतः लोक गाथाएँ सदियों से अपने वर्ग विशेष के बल पर जनमानस को हँसाती–रूलाती, उद्वेलित करती, संघर्ष की प्रेरणा देती, भवित भावना तैयार करती हुई अपनी, परम्परा रीति–रिवाज आदि अपने संस्कृतिक परिवेशों में ढ़लती चली आ रही है।

डॉ० ब्रजकिशोर वर्मा मणिपद्‌म ने लोकगाथा और लोकदेवता पर सबसे अधिक कार्य किया है। मिथिला की लोक गाथाओं में प्रमुख है लोरिक विजय, नैका बनजारा, राजा सल्हेस, लवहरि–कुशहरि रायरणपाल, दुलरा–दयाल, अनंग–कुसमा आदि।

इस तरह अधिकांश लोकदेवता समाज के अनपढ़ और अंत्यज्ञ वर्ग से आते हैं। ये लोकदेवता अपने कर्मों से नायकत्व ग्रहण कर लोकगाथा के रूप में लोक कंठ में बस गये। रोग–शोक, समृद्धि, हर्ष आदि में इन लोकदेवों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो गयी। लोक कल्याणार्थ इनका जन्म हुआ और लोक कल्याणार्थ ये अपने को समर्पित कर दिया। फलतः लोक कल्याण की भावना इनमें निहित है। अतः इनकी गाथा जनमानस के व्याप्त हो गई, जिसे हम लोकगाथा कहते हैं। मिथिला की समृद्ध सांस्कृतिक परम्परा का अभिन्न अंग है, मिथिला की लोकगाथा।

RRIJM 2015, All Rights Reserved

संदर्भ ग्रन्थों की सूचीः–

01. ग्रीयर्सन जी0 ए0 – भारतक भाषा सर्वेक्षण (मैथिली अनुवाद) Vol.-V, P-III मैथिली अकादमी पटना – 1978.
– एन0 इन्ट्रोडक्शन टू मैथिली ग्रामर, एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल, कोलकात्ता– 1880.
02. क्रूक विलियन – द पॉपुलर रेलीजन एण्ड फोकलोर ऑफ नादर्न इण्डिया, Vo.-I नई दिल्ली – 1979.
03. मिश्र जयगोविन्द द्वारा संकलित 'सल्हेस गाथा'।
04. दास पूर्णानन्द – मैथिली लोक काव्य।
05. झा (डॉ0) रामदेव –मैथिली लोसाहित्य : स्वरूप ओ सौन्दर्य, मिथिला रिसर्च सोसाईटी, कबिलपुर, दरभंगा–2002.
06. राम महेन्द्र नारायण एवं पासवान फूलो – सल्हेस लोकगाथा साहित्य अकादमी, नई दिल्ली – 2007.
07. राम महेन्द्र नारायण – मैथिली लोकगाथा–कारिक पंजियार।
08. मणिपद्म – मैथिली लोकगाथाक इतिहास, कर्णगोष्ठी, कोलकाता।
09. मिश्र (डॉ0) विश्वेश्वर – मैथिली लोकगाथाक विवेचन, मैथिली अकादमी, पटना।
10. मिश्र जे0 के0 – एन इन्ट्रोडक्शन टू द फोक लिटरेचर ऑफ मिथिला, तिरभुक्ति प्रकाशन, इलाहाबाद – 1951.

RRIJM 2015, All Rights Reserved